Toppersnotes®
Unleash the topper in you

कृषि – पर्यवेक्षक

Agriculture Supervisor

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग – 2

राजस्थान का भूगोल एवं सामान्य हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

राजस्थान – कृषि पर्यवेक्षक

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का भूगोल	
1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	7
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	19
4.	राजस्थान की झीलें	27
5.	राजस्थान की जलवायु	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	39
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	44
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	49
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	58
10.	राजस्थान में पशुधन	67
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	71
12.	राजस्थान की जनसंख्या	84
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	87
14.	राजस्थान में उद्योग	91
15.	राजस्थान में सूखा, अकाल व मरुस्थलीकरण	95
	हिन्दी	
1.	संधि	98
2.	समास	114
3.	उपसर्ग	120
4.	प्रत्यय	129
5.	शब्द युग्म	136
6.	विलोम–शब्द	145

7.	पर्यायवाची	151
8.	मुहावरे	153
9.	लोकोक्ति	159
10.	वाक्य के लिए एक शब्द	162
11.	वर्तनी शुद्धि	168
12.	वाक्य–शुद्धि	176
13.	पारिभाषिक शब्दावली	182

राजस्थान का भूगोल

राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग
(Physical Regions & Divisions

भूमिका: भौगोलिक प्रदेशों के अध्ययन में सभी भौतिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकीय पक्षों को संमाहित किया जाता है । किसी भौगोलिक प्रदेश का आधार स्तम्भ है– 'भौतिक प्रदेश'

भौतिक प्रदेश वह विशिष्ट क्षेत्र होता है जिसमें उच्चावच, जलवायु, मृदा, वनस्पति इत्यादि में औसत आन्तरिक समरूपता पायी जाती है ।

निष्कर्ष एवं समसामयिक पक्ष : उपर्युक्त के समग्र विवेचन, विश्लेषण एवं परिशीलन के उपरान्त सार रूप में यह निरूपति किया जा सकता है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, औद्योगिकरण निर्वनीकरण, मानदीय हस्तक्षेप इत्यादि के कारण भौतिक प्रदेश की संरचना एवं पर्यावरण में नकारात्मक परिवर्तन हो रहे है जिसे रोकने के लिए धारणीय विकास एवं भौतिक प्रदेशो के संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है ।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशो को उच्चावच एवं धरातल के आधार पर मोटे तौर पर चार भागों में एवं विभिन्न उप विभागों मे विभक्त किया जा सकता है ।

1. पश्चिम मरूस्थलीय प्रदेश
   - शुष्क रेतीला प्रदेश (मरूस्थल)
   - लूणी-जवाई मैदान (लूणी बेसिन)
   - शेखावटी प्रदेश (बांगर प्रदेश)
   - घग्घर का मैदान
2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश - उपविभाजन
   - उत्तरी अरावली
   - मध्य अरावली
   - दक्षिणी अरावली
3. पूर्वी मैदान प्रदेश - उपविभाजन
   - बनास बेसिन
   - चम्बल बेसिन
   - मध्य माही बेसिन (छप्पन का मैदान)
4. दक्षिणी-पूर्वी प्रदेश (हाड़ौती प्रदेश) उपविभाजन
   - अर्द्धचंद्राकर पर्वत श्रेणियां
   - नदी भ्रमित मैदान
   - शाहबाद का उच्च स्थल
   - झालावाड का पठार
   - डग-गंगधार का उच्च क्षेत्र

भौतिक प्रदेशों की सामान्य जानकारी

क्षेत्र	क्षेत्रफल	जनसंख्या	जिले	मिट्टी	जलवायु
मरूस्थल	61.11 प्रतिशत	40 प्रतिशत	12	बलुई	शुष्क व अर्द्धशुष्क
अरावली	9 प्रतिशत	10 प्रतिशत	13	पर्वतीय या वनीय	उपार्द्र
पूर्वी मैदान	23 प्रतिशत	39 प्रतिशत	10	जलोढ	आर्द्र
हाड़ौती, दक्षिण पूर्वी	6.89 प्रतिशत	11 प्रतिशत	7	काली या रेगूर	आर्द्र या अति आर्द्र

राजस्थान में भूगर्भीक संरचना भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में विशिष्ट है । यहां प्राचीनतम प्री - कैम्ब्रीयन युग के अवशेष अरावली के रूप में मौजूद है ।

यहाँ आद्य महाकल्प, पुराजीवी महाकल्प, प्राग्जीवी महाकल्प एवं नवजीवी महाकल्प के साक्ष्य मौजूद है । बाप बोल्डर बैड (बाप गांव जोधपुर) - पुराजीवी महाकल्प के परमियन कार्बोनीफेरस युग के अवशेष मिले है जिन्हें हिमवाहित माना जाता है । कुछ गोलाश्म खंडो पर स्पष्ट लकीरों के चिन्ह सुरक्षित है जो संभवतः हिमवाहित होने के कारण घर्षन उत्पन्न हुए है ।

भादुरा बालुकाश्म (जोधपुर) - यहां जीवाश्म युक्त बालुकाश्म मिले है जो बाप और भादुरा आस पास मिले है । इन बालुकाश्म का निर्माण सामुद्रिक अवस्था मे हुआ है ।

(I) उत्तरी-पश्चिमी मरूस्थलीय-प्रदेश

(i) निर्माणकाल-टर्शयरीकाल (क्वार्टनरी काल में प्लीस्टोसीन) इसे भारत का विशाल मरूस्थल अथवा थार के मरूस्थल के नाम से जाना जाता है ।

इसे मरू प्रदेश का विस्तार लगभग 175000 वर्ग किमी. है । जो सम्पूर्ण राजस्थान का 61.11% प्रतिशत है । इस मरूस्थल का राजस्थान कृषि आयोग के अनुसार सिरोही के अतिरिक्त 12 जिलों मे है । लेकिन वास्तविकता में सिरोही सहित 13 जिलों में है ।

श्री गंगानगर, हनुमानगढ, चुरू, बीकानेर, झुझनु, सीकर, जोधपुर, जालौर, बाड़मेर, जैसलमेर, पाली, नागौर ।

राजस्थान में कुल

(ii) विस्तारः- मरूस्थलीय ब्लॉक-85

(a) लम्बाई - 640किमी.

(b) चौडाई - 300किमी.

(c) औसत ऊँचाई - 200-300 मीटर(औसत 250 मी.)

(iii) तापक्रम - ग्रीष्मकाल - 49°C

शीतकाल - -3°C

औसत - 22°C

(iv) वर्षा - 20 से 50 सेंटिमीटर तक होती है ।

(v) वनस्पिति - जीरोफाइट या शुष्क वनस्पिति पाई जाती है ।

(vii) मिट्टी - रेतीली बलुई मिट्टी

(iii) मरूस्थल का ढाल :-

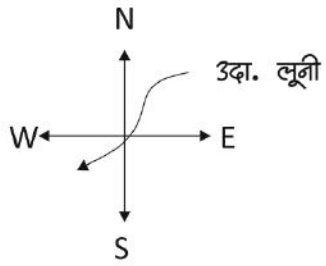

(iv) मरूस्थल का अध्ययन :-

मरूस्थल को अध्ययन की दृष्टि से 2 भागों में बाँटा जाता है ।

- (a) शुष्क मरूस्थल (0-25cm)
- (b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेश (25-50cm)

नोटः-"25 cm. समवर्षा रेखा" मरूस्थल को शुष्क व अर्द्धशुष्क दो भागों में बाँटती है।

(a) शुष्क मरूस्थल

25 cm. से कम वर्षा वाले भौतिक प्रदेश को शुष्क मरूस्थल कहा जाता है ।

पश्चिम मरुस्थल का सबसे बडा जिला - जैसलमेर

पश्चिम मरुस्थल का सबसे छोटा जिला - झुन्झुनूँ

शुष्क मरूस्थल को पुनः दो भागो में बाँटा जाता हैः-

- बालूका स्तूप मुक्त (41.5%)
- बालूका स्तूप युक्त (58.5%)

कारण :- पथरीला मरूस्थल जिसे "हमादा" कहा जाता है ।

विस्तार - जैसलमेर (max.), बाडमेर, जोधपुर

पवन → मिट्टी → निक्षेपण → बालूका स्तूप

नोटः-बालूका स्तूप

जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण किया जाता है तो बनने वाली स्थलाकृति को बालूका स्तूप कहा जाता है जो सर्वाधिक जैसलमेर जिले में है ।

बालूका स्तूप को टीले/टीबे भी कहते है । जैसलमेर में इन्हें धरियन नाम से जाना जाता है ।

बालूका स्तूप के प्रकार

		प्रकार	सर्वाधिक
(i)	पवन ←	अर्द्धचन्द्राकार	बरखाना	शेखावटी (चूरू)
(ii)	पवन ← ← पवन	समकोण	अनुप्रस्थ	बाडमेर, जोधपुर
(iii)	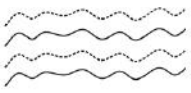 ← ←	समान्तर	अनुदैर्ध्य/रेखीय	जैसलमेर
(iv)			तारानुमा	1. जैसलमेर 2. सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

(V) पेराबोलिक

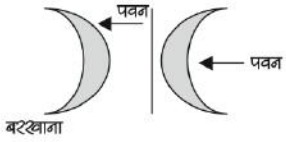

- बरखान के विपरीत या हेयरपिन जैसी आकृति का बालूकास्तूप "पेराबोलिक" कहलाते हैं ।

नोटः- यह बालूकास्तुप राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाते हैं ।

(vi) सीफ (Seif)

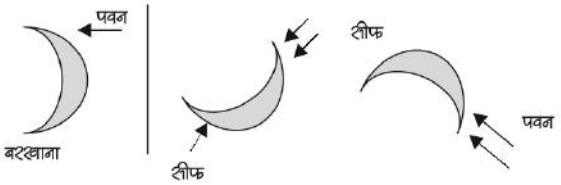

बरखान के निर्माण के दौरान जब पवन की दिशा में परिवर्तन होता है तो बरखान की एक भुजा एक दिशा में आगे की ओर बढ जाती है जिसे सीफ कहा जाता है ।

(vii) शब्र काफीराज (Scrub Coppies)

मरूस्थल में झाडियों के पास पाए जाने वाले छोटे बालूका स्तूप

स्क्रब कॉपीस

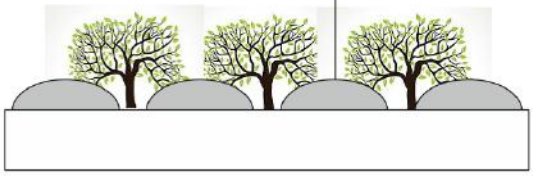

यह सर्वाधिक जैसलमेर में पाए जाते है ।

नोटः- 1 बरखान - अनुप्रस्थ
2 सीफ - अनुदैर्ध्य/रेखीय
3 सर्वाधिक बालूका स्तूप - जैसलमेर
सभी प्रकार के बालूकास्तूप - जोधपुर

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेश

25-50 सेमी वर्षा या शुष्क मरूस्थल व अरावली के मध्य का भौतिक प्रदेश अर्द्धशुष्क मरूस्थल कहलाता है । इसे अध्ययन की दृष्टि से पुनः 4 भागो में बाँटा जाता हैः-

1. लूनी बेसिन
2. नागौर उच्च भूमि
3. शेखावाटी अन्तः प्रवाह
4. घग्घर बेसिन

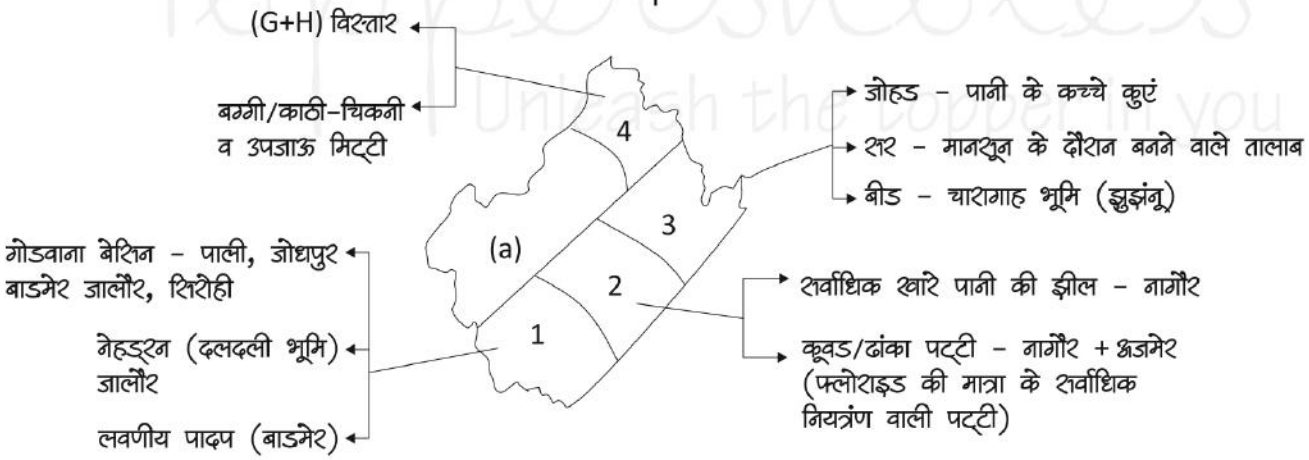

1. अर्द्धशुष्क मरुस्थल

(i) लूणी बेसिन /गोडवार प्रदेश

अजमेर → नागौर → पाली → जोधपुर → बाडमेर → जालौर

- लूणी बेसिन का पूर्वी क्षेत्र - काला भेरा क्षेत्र

(ii) नागौरी उच्च भूमि - यहाँ टेथिस सागर के अवशेष नहीं है क्योंकि यहाँ की चट्टानों में माइकोसिस्ट के अवशेष है ।

- परबतसर कुचामन नावां के अतिरिक्त कहीं भी पहाडियाँ नहीं है ।
- हरियल पक्षी नागौरी उच्च भूमि में ही पाया जाता है ।
- अजमेर व नागौर के मध्य का भाग - कूबड/बांका पट्टी

(iii) शेखावटी अन्तः प्रवाह - सीकर, चूरू, झुन्झुनूँ, जयपुर

- शेखावटी में पानी के कच्चे कुएँ - जोहड

- जोहड के गहरे भाग को पौंधी कहते हैं ।
- जयपुर में कुओं को बेर/बेरा कहते हैं ।

(iv) घग्घर का मैदान – गंगानगर व हनुमानगढ का क्षेत्र है । घग्घर नदी के क्षेत्र को नाली/पाह/बग्गी कहते हैं ।

पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश से संबंधित विशेष तथ्य

पश्चिमी राजस्थान में परम्परागत रूप से जल संरक्षण की अनेक पद्धतियाँ पायी जाती है जो हैः-

पद्धतियाँ

1. प्लाया/खडीन/ढाढ झील :-

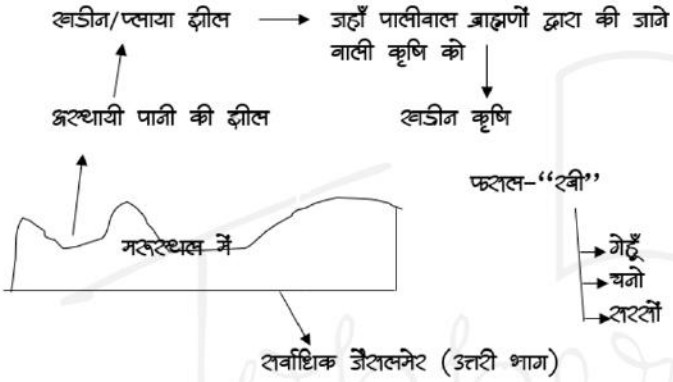

2. आगोर :- घर के आँगन में निर्मित जल संग्रहण के लिए बना टाका या झालरा आगोर कहलाता है ।

3. नाडी :- प्राकृतिक गड्ढे में जल का संग्रहण नाडी कहलाता है जिसके जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यो के लिए किया जाता है ।
नाडी विशेष रूप से जोधपुर में है ।

4. बावडी :- सामान्यतः सीढीनुमा चोकोर तालाब बावडी कहलाता है ।
बावडी शंक जाति द्वारा प्रारंभ की गई बावडियों का शहर - बूंदी

5. बेरा या बेरी :- खडीन या टोबा या नाडी से रिसने वाले जल के सदुपयोग के लिए इसके चारों ओर छोटे-छोटे कुएँ बना दिये जाते है जिन्हे जैसलमेर के आसपास के क्षेत्रों में बेरा या बेरी कहा जाता है ।

6. टोबा :- कृत्रिम रूप से निर्मित गड्ढे में जल संग्रहण टोबा कहलाता है ।

7. जोहड या खूँ :- शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाने वाले कुएं जोहड या खूँ कहलाते है जो ढोबा या नाडी में रिसने वाले जल का सदुपयोग करने के लिए निर्मित किये जाते है ।

पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के प्रकार या क्षेत्र

पश्चिमी राजस्थान सामान्यत शुष्क एवं मरूस्थलीय क्षेत्र है फिर भी कहीं-कहीं जल की उपलब्धता के कारण यहाँ हरियाली मिलती है । इस तरह पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के भिन्न-भिन्न रूप निम्नांकित है-

1. मरूद्भिद् (XEROPHYTE)

अरावली के पश्चिम में पायी जाने वाली कंटीली झाडियाँ एवं वनस्पति मरूद्भिद कहलाती है । इनकी जडे अधिक गहरी तथा पतियाँ काँटो के रूप में होती है । जैसे बबूल, केर, बेर, नागफनी, आक, फोग, खेजडी, खींप, रोहिडा, झरबेरी इत्यादि ।

2. चाँधन नलकूप

जैसलमेर का वह क्षेत्र जहाँ मीठा भूमिगत पानी मिलता है। चाँधन नलकूप कहलाता है। इसे 'थार का घडा' भी कहते है । इसका कारण यहाँ पौराणिक सरस्वती नदी के अवशेष होना बताया जाता है ।

3. मरूद्यान या नखलिस्तान (OASIS)

मरूस्थल में वह क्षेत्र जहाँ जल की उपलब्धता होने के कारण वह क्षेत्र हरा-भरा हो जाता है, जैसे चाँधन नलकूप, श्री कोलायत झील ।

4. तल्ली/मरहो/बालसन

मरूस्थल में बालूका स्तूपों के मध्य मिलने वाली निम्न भूमि तल्ली/मरहो/बालसन कहलाती है ।

5. रन/टाट

मरूस्थल में लवणीय, दलदली व अनुपजाऊ भूमि को रन/टाट कहा जाता है । रन सर्वाधित जैसलमेर में पाए जाते है ।

नोट :-

प्रमुख रन	स्थान
तालछापर	चूरू
परिहारी	चूरू
फलौदी	जोधपुर
बाप	जोधपुर
थोब	बाड़मेर
भाकरी	जैसलमेर
पोकरण	जैसलमेर (परमाणु परीक्षण 1974 (18 मई) 1998 (11,13 मई)

6. प्लाया/खारी झीलें/सेलिना या सेलाइना

बालूका स्तूपों के मध्य निम्न भूमि में जल एकत्रित होने से निर्मित खारी झीलें प्लाया कहलाती हैं ।

7. लाठी सीरीज

जैसलमेर के उत्तर पूर्व में 60 किमी लम्बी भूगर्भीय जल पट्टी लाठी सीरीज कहलाती है। यह क्षेत्र 'सेवण या लीलोण' घास के लिए प्रसिद्ध है। कटडी, धामण

8. मरूस्थलीकरण/मरूस्थल का मार्च

- मरूस्थल का आगे बढना/विस्तार
- दिशाः- SW - NE
- विस्तार सर्वाधिक :-हरियाणा
- सर्वाधिक योगदानः- बरखान
  क्योकि इनकी गति या स्थानान्तरण सर्वाधिक होता है ।

नोट :-

- Erg (अर्ग) → रेतीला
- रेग → दोनो (रेतीला + पथरीला)
- हमादा → पथरीला

निष्कर्षण

मरूस्थल में इसी हरियाली के कारण पेड-पोधे जीव जन्तु एवं मानव-जीवन मिलता है। यही कारण है कि थार का मरूस्थल विश्व का सर्वाधिक जैव-विविधता वाला मरूस्थल है ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

मावठ/महावठ

भूमध्यसागरीय चक्रवातों या पश्चिमी विक्षोभ से शीतकाल में होने वाली वर्षा मावठ कहलाती है ।

यह रबी की फसल विशेषकर गेहूँ के लिए अमृत तुल्य होती है । इस कारण इसे "गोल्डन ड्रॉप्स (Golden Drops) भी कहा जाता है ।

रामगांव

जैसलमेर जिले में अवस्थित पूर्णतः वनस्पतिरहित क्षेत्र है जहाँ फिल्मों की शूटिंग होती है तथा यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। यहां 10 सेमी. बारिश होती है ।

आंकलगाँव

राजस्थान का एकमात्र "वूड फॉसिल्स पार्क"(लकडी के जीवाश्म का) है। यहाँ 8 करोड वर्ष पुराने जूरासिक काल के लकडी के अवशेष मिले है । यह राष्ट्रीय मरूउद्यान का ही भाग है ।

मरूस्थलीकरण

मरूस्थल का निरन्तर प्रसार जिसके कारण भूमि का धीरे-धीरे बंजर होते जाना ही मरूस्थलीकरण कहलाता है । इसे 'मार्च पास्ट ऑफ डेजर्ट' भी कहते है ।

लघु मरूस्थल/थली

थार के मरूस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ के रन से बीकानेर तक विस्तृत है, लघु मरूस्थल कहलाता है । यह अपेक्षाकृत नीचा है । इसे बीकानेर के आस-पास के क्षेत्र में इसे थली तथा यहाँ के निवासियों को थलिया भी कहते है ।

धरियन

जैसलमेर जिले में कम आबादी वाले स्थानों पर पाये जाने वाले स्थानान्तरित बालुका स्तूप धरियन कहलाते है ।

सर/सरोवर

विशेष रूप से शेखावाटी एवं सामान्यतः पश्चिमी राजस्थान में तालाबों को सर या सरोवर कहा जाता है । जैसे-अलसीसर, मलसीसर, कोडमदेसर आदि ।

पीवणा

- पश्चिमी राजस्थान में पाया जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प पीवणा है ।
- पीवणा सर्प डंक नहीं मारता बल्कि रात्रि के सोते समय व्यक्ति को श्वास के द्वारा जहर देकर मार देता है ।

हिन्दी

समास

- **समास शब्द का अर्थ** – संक्षिप्त या छोटा करना है।
- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप होता है।
- समास शब्द 'सम् + आस' के योग से बना है।
  यहाँ 'सम्' का अर्थ – समीप
  एवं 'आस' का अर्थ – बैठना
  अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना या आपस में मिल जाना ही समास कहलाता है।
  जैसे – गौ के लिए शाला – गौशाला
- इस प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से विभक्ति चिह्नों के कारण जो नवीन शब्द बनते हैं उन्हें सामासिक या समस्त पद कहते हैं।
- सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त करने वाले विभक्ति चिह्नों आदि के साथ प्रकट करने या लिखने वाली रीति को 'विग्रह' कहते हैं।
  जैसे – 'धनसंपन्न' समस्त पद का विग्रह 'धन से संपन्न'
  'रसोईघर' समस्त पद का विग्रह 'रसोई के लिए घर'
- समस्त पद में मुख्यतः दो पद होते हैं – पूर्वपद व उत्तरपद।
  पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

समस्त पद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास विग्रह
पूजा घर	पूजा	घर	पूजा के लिए घर
माता–पिता	माता	पिता	माता और पिता
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह
हस्तगत	हस्त	गत	हस्त में गया हुआ
रसोई घर	रसोई	घर	रसोई के लिए घर

समस्त पद एवं समास विग्रह – दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में जोड़ देना ही समस्त पद या समास होता है व आपस में जुड़े हुए शब्दों को तोड़ना या अलग करना समास विग्रह कहलाता है।
समास विग्रह करते समय 'मूल' शब्द का ही प्रयोग होता है।

नोट –
पर्यायवाची शब्द को समास विग्रह में उपयोग मे नहीं लिया जाता है।

क्र.सं.	समास या समस्त पद	समास विग्रह
1.	यथा समय	समय के अनुसार
2.	बेखबर	बिना खबर के
3.	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
4.	यशप्राप्त	यश को प्राप्त

समास के भेद – एक समास में कम से कम दो पदों का योग अवश्य होता है।
समास के उन दो पदों में से किसी एक पद का अर्थ प्रमुख होता है। अर्थ की इसी प्रधानता के अनुसार समास के प्रमुखतः चार भेद होते हैं।
उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभागत्व के अनुसार ये भेद किए गए हैं।

1. जिस समास में पहला शब्द प्रायः प्रधान होता है, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।
2. जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है, उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं।
3. जिस समास में दोनो शब्द प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
4. जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समास के प्रमुख भेद इस प्रकार है–
1. पहला पद प्रधान – अव्ययीभाव समास
2. दूसरा पद प्रधान – तत्पुरुष समास

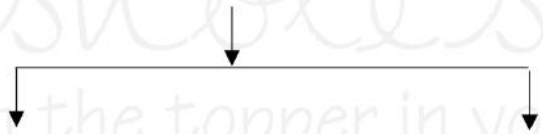

नोट –
कर्मधारय व द्विगु समास दोनों में द्वितीय पद ही प्रधान होता है।
अतः इन दोनों समासों को मुख्य भेदों में शामिल न कर इन दोनों को तत्पुरुष समास के उपभेदों में शामिल किये जाते हैं।
3. दोनों पद प्रधान – द्वंद्व समास
4. अन्य पद प्रधान – बहुव्रीहि समास

1. **अव्ययीभाव समास** – इस समास में परिवर्तनशीलता का भाव होता है और उस अव्यय पद का का रूप, लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता है व सदैव एकसा रहता है व पहला पद प्रधान होता है। इस समास में प्रथम पद कोई उपसर्ग या अव्यय शब्द होता है व इस समास में एक पद का भी प्रायः दोहराव होता रहता है लेकिन ज्ञात रहे यदि दोहराव वाले पद में युद्धवाचक अर्थ (योद्धा) प्रकट हो रहा हो तो वहाँ पर बहुव्रीहि समास माना जाता है।

उदाहरण

समस्त	पद	विग्रह
1.	बेखबर	बिना खबर के
2.	प्रतिदिन	हर दिन
3.	भरपेट	पेट भरकर
4.	आजन्म	जन्म से लेकर
5.	आमरण	मरणतक
6.	यथासमय	समय के अनुसार
7.	प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
8.	प्रतिक्षण	हर क्षण
9.	बेवजह	वजह से रहित

अपवाद – हिंदी के कई ऐसे शब्द या समस्त पद जिनमें कोई शब्द अव्यय नहीं होता है परन्तु समस्त पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है वहाँ भी अव्ययीभाव समास माना जाता है–

जैसे –

घर – घर	घर के बाद घर
रातों रात	रात ही रात में

अव्ययीभाव समास के प्रमुख नियम

आ / यावत,यथा,प्रति,बा / स, बे / ला / निस् / निर् / नि आदि उपसर्ग होने पर–

1. ''मूल शब्द + तक''
   जैसे – आजीवन – जीवन रहने तक
2. ''मूल शब्द + के अनुसार''
   जैसे – यथायोग्य – योग्यता के अनुसार
3. ''हर + मूल शब्द''
   जैसे – प्रतिपल – हर पल
4. ''मूल शब्द + के सहित''
   जैसे – सशर्त – शर्त के सहित
5. ''मूल शब्द + से रहित''
   जैसे –

बेशर्म	शर्म से रहित
अकारण	बिना कारण के
अनजाने	बिना जानकर
यथास्थिति	जैसी स्थिति है
यथामति	जैसी मति है
यथा विधि	जैसी विधि निर्धारित है
नगण्य	न गण्य

2. **तत्पुरुष समास** – इस समास में पहला पद गौण व दूसरा पद प्रधान होता है।
   इस समास में कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है (कर्ता व संबोधन कारक को छोड़कर) इसलिए छह कारकों के आधार पर इस समास के 6 भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष समास – इस समास में 'को' विभक्ति चिह्नों का लोप रहता है।

जैसे

ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देने वाला
आत्मविस्मृत	आत्मा को विस्मृत
सर्वप्रिय	सर्व को प्रिय
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
पदप्राप्त	पद को प्राप्त
आदर्शोन्मुख	आदर्श को उन्मुख
शरणागत	शरण को आया हुआ
ख्यातिप्राप्त	ख्याति को प्राप्त
क्रमागत	क्रम को आगत

(ii) करण तत्पुरुष समास – इस समास में समास विग्रह करने पर 'से' चिह्न का लोप होता है व 'के द्वारा' का भी लोप होता है।

जैसे

भावपूर्ण	भाव से पूर्ण
बाणाहत	बाण से आहत
अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़ पीड़ित	बाढ से पीड़ित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
चिंताव्याकुल	चिंता से व्याकुल
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दत्त
आँखों देखी	आँखों द्वारा देखी हुई

(iii) संप्रदान तत्पुरुष समास – इस समास में 'के लिए' चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च
बालामृत	बालकों के लिए अमृत
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
कर्णफूल	कर्ण के लिए फूल
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
घुड़साल	घोड़ो के लिए साल
महँगाई – भत्ता	महँगाई के लिए भत्ता
छात्रावास	छात्राओं के लिए आवास
सभाभवन	सभा के लिए भवन
रोकड़बही	रोकड़ के लिए बही
हवन कुण्ड	हवन के लिए कुण्ड
हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री
विद्युतगृह	विद्युत् के लिए गृह
समाचार पत्र	समाचार के लिए पत्र

(iv) अपादान तत्पुरुष समास – इस समास में 'से' पृथक या अलग के लिए चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

अवसरवंचित	अवसर से वंचित
देशनिकाला	देश से निकाला
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
कामचोर	काम से जी चुराने वाला
कर्त्तव्य विमुख	कर्त्तव्य से विमुख
जन्मांध	जन्म से अंधा
गुणातीत	गुणों से अतीत
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
आशातीत	आशा से अतीत
गुणरहित	गुण से रहित
गर्वशून्य	गर्व से शून्य
जन्मरोगी	जन्म से रोगी
जातबाहर	जाति से बाहर
जलरिक्त	जल से रिक्त

(v) संबंध तत्पुरुष समास – यह समास का, के, की लोप से बनने वाला समास है।

जैसे –

गंगाजल	गंगा का जल
नगरसेठ	नगर का सेठ
आत्महत्या	आत्म की हत्या
कार्यकर्ता	कार्य का कर्ता
गोमुख	गो का मुख
मतदाता	मत का दाता
राजमाता	राजा की माता
जलधारा	जल की धारा
पथपरिवहन	पथ का परिवहन
भूकंप	भू का कंप
मंत्रिपरिषद्	मंत्रियों की परिषद्
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड
रक्तदान	रक्त का दान
विद्यार्थी	विद्या का अर्थी
शांतिदूत	शांति का दूत

(vi) अधिकरण तत्पुरुष समास – इस समास में 'में' 'पर' चिह्नों का लोप होता है।

जैसे –

जलमग्न	जल में मग्न
कर्मनिष्ठ	कर्म में निष्ठ
आपबीती	आप पर बीती
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
सिरदर्द	सिर में दर्द
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
ग्रामवासी	ग्राम मे वास करने वाला
जलयान	जल पर चलने वाला यान
जलपोत	जल पर चलने वाला पोत
गंगास्नान	गंगा में स्नान
कार्य कुशल	कार्य में कुशल
कलानिपुण	कला में निपुण
आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
ईश्वराधीन	ईश्वर पर अधीन
अश्वारूढ	अश्व पर आरूढ

नञ् तत्पुरूष समास – यदि किसी सामासिक पद में प्रथम पद के रूप में अ/अन/अन् /न/ना उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तथा यह उपसर्ग मूल शब्द को विलोम शब्द के रूप में परिवर्तित कर रहे हो तो वहाँ पर नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं।

इस समाज का विग्रह करते समय उपसर्ग को हटाकर 'न' शब्द जोड़ दिया जाता है।

जैसे –

अज्ञान	न ज्ञान
अनन्त	न अन्त
नालायक	न लायक
अनमोल	न मोल

3. द्विगु समास – इस समास का पहला पद संख्यावाचक अर्थात् गणना बोधक होता है व दूसरा पद प्रधान होता है, क्योंकि इसमें बहुदा यह जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समूह है।

इस समास के पदों का विग्रह करते समय दोनो पदों को लिखकर अन्त में का समूह/समाहार पद जोड़ दिया जाता हैं।

समस्त पद	विग्रह
1. नवरत्न	नौ रत्नो का समूह
2. अठवाड़ा	आठ दिनों का समूह
3. द्विगु	दो गौओ का समूह
4. शताब्दी	सौ अब्दों (वर्षो) का समूह
5. त्रिभुज	तीन भुजाओ का समूह
6. चौराहा	चार राहों का संगम
7. पंचरात्र	पंच रात्रियों का समूह
8. त्रिमूर्ति	तीन मूर्तियों का समूह
9. तिकोना	तीन कोनों का समूह

10. सिपाही	सि (तीन) पैरों का समूह
11. एकतरफ	एक ही तरफ है जो
12. अष्टधातु	आठ धातुओं का समूह
13. त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह
14. शतक	सौ का समूह
15. चौबारा	चार द्वार वाला भवन

अपवाद –

पक्षद्वय	दो पक्षो का समूह
लेखकद्वय	दो लेखकों का समूह
संकलनत्रय	तीन संकलनो का समूह

4. **कर्मधारय समास –** इस समास के पहले व दूसरे पद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का संबंध होता है।

इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है।

इस समास को समानाधिकरण तत्पुरुष कहते है।

समस्त पद	विग्रह
(i) विशेषण विशेश्य	
महापुरुष	महान् है जो पुरुष
पीतांबर	पीला है जो अंबर
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को
नीलगगन	नीला है जो गगन
नीलकमल	नीला है जो कमल
महात्मा	महान् है जो आत्मा
श्वेतवस्त्र	श्वेत है जो वस्त्र
नीलोत्पल	नीला है जो उत्पल (कमल)

(ii) उपमान– उपमेय	विग्रह युक्त पद
चंद्रवदन	चंद्रमा के समान वदन
भवसागर	भवरूपी सागर
विद्याधन	विद्यारूपी धन
मृगनयनी	मृग के समान नेत्र वाली
पादार विन्द	अरविन्द के समान हैं जो पाद
चंद्रमुख	चंद्र के समान है जो मुख

(iii) रूपक आलांकारिक	पद विग्रह युक्त
मनमंदिर	मनरूपी मंदिर
ताराघट	तारारूपी घट
शोकसागर	सागर रूपी शोक

(iv) सु/कु उपसर्ग से बने	पद विग्रह
सुपुत्र	सुष्ठु है जो पुत्र
सुमार्ग	सुष्ठु है जो मार्ग
कुमति	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	कुत्सित है जो पुत्र

5. **द्वन्द्व समास –** इस समास में दोनों पद समान रूप से प्रधान होते हैं।

इसके दोनों पद योजक – चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं व समास विग्रह करने पर 'और', 'या' 'अथवा' तथा 'एवं' आदि लगते हैं।

इस समास के मुख्यतः तीन भेद होते है–

द्वन्द्व समास

इतरेतर द्वन्द्व समास | समाहार द्वन्द्व समास | एकशेष द्वन्द्व समास

(i) इतरेतर द्वन्द्व समास – इस समास में दो शब्दों का अर्थ होता है व दोनों पद प्रधान होते हैं, साथ में दोनों शब्दों का अर्थ भी अलग–अलग होता है।

अन्न–जल	अन्न और जल
आयात – निर्यात	आयात और निर्यात
दम्पती	दम् (पत्नी) और पति
दूध–रोटी	दूध और रोटी
देश– विदेश	देश और विदेश
दाल–रोटी	दाल और रोटी

(ii) समाहार द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं व दोनों शब्दों का अर्थ दो या दो से अधिक होता है।

आगा – पीछा	आगा, पीछा आदि
कंकर – पत्थर	कंकर, पत्थर आदि
रोक – टोक	रोक, टोक आदि
चाय – पानी	चाय, पानी आदि
खाना – पीना	खाना, पीना आदि
चलता – फिरता	चलता, फिरता,
धल – दौलत	धन, दौलत आदि

नोट – एक से 10 तक की संख्याओ का छोड़कर व 10 से भाज्य संख्या को छोड़कर अन्य सभी संख्यावाची शब्दों में समाहार द्वन्द्व समास होगा।

सैंतीस	सात और तीस का समाहार
चौबीस	चार और बीस का समाहार
तिरासी	तीन और अस्सी का समाहार

(iii) एकशेष द्वन्द्व समास – इस समास में विग्रह करने पर तो कई पद होते हैं, परन्तु समस्त पद बनाते समय किसी एक को ही ग्रहण किया जाता है।

सुख–दुःख	सुख या दुःख
आज – कल	आज या कल
हानि – लाभ	हानि या लाभ
गमनागमन	गमन या आगमन
गुण – दोष	गुण या दोष

6. **बहुव्रीहि समास –** इस समास में पूर्वपद व उत्तरपद दोनों ही गौण होते हैं व अन्य पद प्रधान होता है व शाब्दिक अर्थ को छोड़कर एक नया अर्थ निकलता है। **जैसे** – लंबोदर – लंबा है उदर (पेट) जिसका इस शब्द में दोनों पदों का अर्थ प्रधान न होकर अन्यार्थ 'गणेश' शब्द प्रधान है।

समस्त पद	**समास विग्रह**
घनश्याम	घन जैसा श्याम अर्थात् कृष्ण
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका अर्थात् शिव
दशमुख	दश मुख हैं जिसके अर्थात् रावण
महावीर	महान् है जो वीर अर्थात् हनुमान
हंसवाहिनी	हंस है वाहन जिसका अर्थात् सरस्वती
वज्रपाणि	वज्र है पाणी में जिसके वह (इन्द्र)
चन्द्रमुखी	चन्द्र के समान है जिसका मुख (सुंदर स्त्री)
गजानन	गज के समान आनन वाला अर्थात् गणेश
दिंगबर	दिशा ही है अंबर जिसका अर्थात् शिव

प्रायः कुछ समासों में एक ही साथ अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं, ऐसी स्थिति सर्वप्रथम बहुव्रीहि समास का ही चयन करें। ज्ञात रहे यदि बहुव्रीहि समास न हो तब हम अन्य समास का चयन कर सकते हैं।

कर्मधारय व बहुव्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास में दोनों पदों में विशेषण व विशेष्य व उपमान व उपमेय का संबध होता है, लेकिन बहुव्रीहि समास में दोनो पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद प्रधान होता है।

मृगनयन	मृग के समान नयन (कर्मधारय)
नीलकंठ	वह जिसका कंठ नीला है (शिव) – बहुव्रीहि
	बहुव्रीहि / कर्मधारय
पीताम्बर	बहुव्रीहि / कर्मधारय
पंचवटी	द्विगु / तत्पुरुष
चौमासा	बहुव्रीहि / द्वन्द्व
गजानन	बहुव्रीहि / तत्पुरुष
मनोज	बहुव्रीहि / तत्पुरुष (उपपद)
दशानन	बहुव्रीहि / द्विगु

बहुव्रीहि व द्विगु समास में अन्तर

1. **द्विगु समास –** इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है व समस्त पद समूह का बोध प्रकट करता है।
   जैसे–
   चौराहा – चार राहों का समूह

2. **बहुव्रीहि समास** – इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है लेकिन समस्त पद से समूह का बोध न होकर अन्य अर्थ का बोध कराता है।
   जैसे–
   चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसके (विष्णु)
   तिरंगा – तीन हैं रंग जिसमें वह (राष्ट्रध्वज)

समस्त पद	**विग्रह**
प्रधानमंत्री	मंत्रियों मे प्रधान है जो
निर्भय	जो व्यक्ति किसी से भय नहीं खाता हो
अनन्त	अन्त नही जिसका
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
अनहोनी	न होने वाली घटना
चंद्रमौली	चंद्र है मौलि पर जिसके(शिव) शीश/सिर
सुहासिनी	सुंदर है हंसी जिसकी वह (भारतमाता)
सुकेशी	सुदंर केश (किरणें) हैं जिसकी (चाँद)
कुरूप	असुन्दर रूप वाला
मीनाक्षी	मीन के समान हैं अक्षि जिसका (सुंदर स्त्री) आँख/नयन
चन्द्रशेखर	शेखर पर चन्द्र है जिसके (शिवजी)
खगेश	खगों का ईश (गरूड़)

जितेंद्रिय	जीती हैं जिसने इंद्रियाँ (कामना रहित)
अल्पबुद्धि	अल्प है बुद्धि जिसकी (व्यक्ति विशेष)
पीताम्बर	पीत अम्बर (वस्त्र) वाला (श्री कृष्ण)
पतझड़	झड़ते हैं पत्ते जिसमें (ऋतु विशेष)
षडानन	षड (छः) है आनन (मुख) जिसके (कार्तिकेय)
बहुमान	वह व्यक्ति जिसका बहुत मान हो
निरभिमान	वह व्यक्ति जिसमें अभिमान न हो
निर्लेप	किसी वस्तु या विषय में आसक्त न होने वाला विशेष
मयूरवाहन	मयूर की सवारी है जिसकी (कार्तिकेय)
निराधार	वह व्यक्ति जिसे कोई सहारा प्राप्त न हो।
पंकज	पंक में पैदा हो जो (कमल)
निर्भ्रम	जिस व्यक्ति के/में कोई भ्रम न हो।
कलमुँहा	काला है मुँह जिसका (लांछित व्यक्ति)
आनाकानी	ना करना – टालमटोल करना।